

পাঁচমুড়া টেরাকোটা শিল্প

Malay Khan

Department of History, Jadavpur University

Abstract

This article delves into the rich heritage of Panchmura Terracotta Art, an ancient craft that has thrived in the heart of West Bengal's Bankura District for centuries. The study explores the historical evolution, artistic techniques, and cultural significance of this unique form of terracotta craftsmanship, which has become synonymous with the region's cultural identity. Panchmura artisans, known for their exceptional skill and mastery, create intricate terracotta sculptures that depict mythological narratives, folklore, and everyday life. The article sheds light on the five prominent keywords associated with Panchmura Terracotta Art: Tradition, Symbolism, Craftsmanship, Heritage, and Revitalization. Tradition encapsulates the deep-rooted cultural practices and rituals embedded in the craft, emphasizing its continuity across generations. Symbolism explores the intricate narratives conveyed through the sculptures, reflecting the socio-religious ethos of the community. Craftsmanship examines the meticulous techniques employed by artisans, highlighting the intricate detailing and precision that define Panchmura Terracotta. Heritage underscores the art form's contribution to the cultural legacy of Bankura, while Revitalization discusses contemporary efforts to sustain and promote this traditional craft in the face of modern challenges. This article offers a comprehensive overview of Panchmura Terracotta Art, celebrating its resilience and exploring avenues for its continued relevance in the contemporary cultural landscape.

Keywords: Panchmura Terracotta, Bankura District, West Bengal, Cultural Heritage, Artisan Craftsmanship

INTRODUCTION

অধ্যয়ন এলাকার অবস্থান:

পশ্চিমবঙ্গ ভারতের মধ্যে জাঁকজমকপূর্ণ "টেরাকোটা" কারুশিল্প উৎপাদনে অন্যতম শীর্ষস্থানীয়। এই মৃৎশিল্প ভারতে নতুন সংস্করণ নয় বরং এর নিজস্ব একটি দীর্ঘ ঐতিহাসিক পটভূমি রয়েছে। বিভিন্ন প্রত্নতাত্ত্বিক প্রমাণ প্রমাণ করে যে এটি সিন্ধু উপত্যকা সভ্যতার যুগে প্রচলিত ছিল। যদিও বাংলার নৈপুণ্যের জমিতে কখন এবং কীভাবে এই পোড়ামাটির কারুশিল্পের সূচনা হয়েছিল তা এখনও রহস্যজনক, তবে এই অঞ্চলে উর্বর পলিমাটি এবং প্রচুর কাদামাটির প্রাপ্যতা অবশ্যই এটি দ্রুত ছড়িয়ে দিতে সহায়তা করে। পশ্চিমবঙ্গ পর্যটকদের কাছে পোড়ামাটির কারুশিল্পের জিনিস কেনার জন্য এটি একটি জনপ্রিয় গন্তব্য কারণ এটি এখন পর্যন্ত এই সৃজনশীল এবং আলংকারিক কারুশিল্পের বৃহত্তম উৎপাদনকারী। বাঁকুড়া জেলার খাতরা মহকুমার অন্তর্গত পাঁচমুড়া গ্রামটি এই পোড়ামাটির কাজের বৃহত্তম উৎপাদন ইউনিট। অধ্যয়ন এলাকা হিসাবে নেওয়া হয়। পাঁচমুড়া 22°58'00"N- 22°66'67"N এবং 87°10'00"E 87°16'67"E এর মধ্যে অবস্থিত। গড় সমুদ্রপৃষ্ঠ থেকে এর গড় উচ্চতা 68 মিটার। মোট গ্রামের জনসংখ্যা হল 719 (2011 সালের জনসংখ্যার তথ্য অনুযায়ী), যার মধ্যে সর্বাধিক জনসংখ্যা টেরাকোটা কারুশিল্পের উপর ভিত্তি করে। লম্বা গলার ঘোড়া এই কারুশিল্পের মৌলিক প্রতীক যা বাঁকুড়া জেলার প্রতিনিধিত্ব করে। এই লম্বা গলাটি বিষ্ণুপুরের মল্ল রাজ্যের রাজকীয়তা দেখায়, যেটি শুধুমাত্র ধর্মীয় বা আধ্যাত্মিক আবেদনে এই কারুশিল্পকে কেন্দ্রীভূত করেনি বরং এটি গেস্ট হাউস, বিলাসবহুল হোটেলগুলিকে এর মহিমাম্বিত আলংকারিক মূল্যবোধের জন্য সজ্জিত করে।

পাঁচমুড়া গ্রামটি বাঁকুড়া জেলায় অবস্থিত, যেখানে প্রায় 300 জন শিল্পী পোড়ামাটির কারুশিল্প তৈরির কাজে নিযুক্ত রয়েছে। কারুকাজটি লম্বা গলার ঘোড়া এবং হাতি, মনশা চালি, হিন্দু পুরাণের বিভিন্ন পুতুল এবং মূর্তি, টেরাকোটা শঙ্খ এবং অন্যান্য প্রবন্ধ যা সজ্জার উদ্দেশ্যে কক্ষগুলিকে শোভিত করে তা তৈরির জন্য বিখ্যাত। এই সমস্ত নৈপুণ্যের আইটেমের মধ্যে লম্বা গলার ঘোড়াগুলি সবচেয়ে গুরুত্বপূর্ণ। টেরাকোটা বেকড মাটির অনুরূপ। কারিগররা প্রায়শই তাদের তৈরি পণ্যগুলি বেকড মাটি দিয়ে রঙ করে এবং কাঠের জ্বালানী দিয়ে বা প্রায়শই ইউক্যালিপটাস পাতার সাহায্যে একটি ভাটায় আগুনের মাধ্যমে পুড়িয়ে দেয়। এই পোড়ামাটির কারুকাজটি হল সহজ শৈল্পিক ফর্ম যা মানুষের বা পশুর মূর্তি থেকে শুরু করে গৃহস্থালির সাজসজ্জার উপাদান এবং শোভাময় চিত্রের বিস্তৃত পরিসর থাকতে পারে। এটি বিশ্বাস করা হয় যে এই পোড়ামাটির কারুকাজটি 'মল্লা' রাজবংশের সময় শুরু হয়েছিল যা সপ্তম শতাব্দীর শেষের দিকে ছিল। এই শৈল্পিক আবিষ্কারের পর কারিগর বিষ্ণুপুরের মন্দিরের দেয়ালে এই কারুকাজটি প্রজেক্ট করতে শুরু করেন। এটি এখন আন্তর্জাতিকভাবে বিখ্যাত এবং এর শিল্প ও ঐতিহ্যের মূল্যের জন্য জিআই সূচক পেয়েছে। পাঁচমুড়ায় একটি মৃত্যুশিল্পী সমবায় সমিতি রয়েছে, এটি একটি সহায়তা কেন্দ্র এবং শিল্পী ক্লাস্টার দ্বারা তাদের উৎপাদন এবং

<https://www.gapbhasha.org/>

कानेर टुकरो आलादाभावे राखा हय परे कारुशिल्लेर जिनिस् विक्रि करार परे एटि राखा हय। चूडास्तु समाप्ति एवंग रण्णानिः स्थानीयभावे संवादपत्र एकाटि प्याकेजिं उपादान हिसावे नेओया हय एवंग एटि फलेर कार्टन वा अन्यान्य सहजलभ्य कार्ड बोर्ड बास्त्र इत्यादिते प्याक करा हय। परे एटि तिन चाकार रिकशा वा किछु मिनि ट्राके विक्रि उद्देश्ये बाँकुड़ा वा बिष्णुपुर बाजारे निये याओया हय। बिष्णुपुर एवंग बाँकुड़ा स्थानीय बाजारे नैपुण्येर जिनिस्गुलि प्रदर्शित हय। घोड़ा दाम 20 थेके 2000 टाका पर्यन्त हये थाके 14 थेके 6 फुट उच्चतार माप।

प्रति डिसेम्बरे शीत मौसुमे एहि कारुशिल्लेर आरओ भालो प्रदर्शन ओ प्रचारेर जन्य वार्षिक मेलाेर आयोजन करा हय। बांग्ला क्यालेन्डारे चैत्र मासे चडक मेला हल सेहि उतंसव येथाने कारुशिल्लेर सामग्री विक्रि सुयोग पाओया यय। पङ्गमुड़ा कारिगरेर साथे पश्चिमवन्शेर क्राफ्ट काउन्सिल अत्यन्त संयुक्त। एहि प्रतिष्ठानटि एहि कारिगरके तादेर उन्नत प्रशिक्षण ओ व्यवस्थापना, आर्थिक ओ प्रयुक्तिगत सहायता एवंग विपणन सहायता अर्जनेर जन्य साहाय्य करे। (श, 2008) वर्तमान विश्वायनेर युगे बाँकुड़ा जेलाेर टेराकोटा कारुशिल्ल विश्वव्यापी जनप्रिय। एहि पाँचमुड़ा अङ्गले पोड़ामाटिेर नैपुण्य प्रथम उद्भावित हयेछे बले एखन स्वीकृत। एर सफल आविष्कारेर पर कारिगररा बिष्णुपुरेर मन्दिरेर देयाले एहि कारुकाजटि खोदाइ करे। बिभिन्न ऐतिहासवाही गृह-भित्तिक आलंकारिक निवन्ध, फुलदानि, शङ्ख, वासनपत्र, अलङ्कारगुलि एहि अङ्गलेर प्रधान कारुशिल्ल। स्थानीय कारिगररा कुम्भकार सम्प्रदाय हिसावे विख्यात, यारा प्रतिदिनेर गृह-भित्तिक उपयोगी पण्यगुलि आलंकारिक एवंग आध्यात्मिक प्रतीकी आइटेम तैरिते नियुक्त थाके। कारिगररा सम्प्रति दैनिक प्रयोजन भित्तिक पण्य येमन वाति, टाइलस इत्यादि तैरि करे यार शहरे एलाकाय सर्वेओम् चहिदा रयेछे।

शिल्ली ओ पुरस्कार प्राप्त शिल्ली

टेराकोटा शिल्ले विख्यात व्यक्तिवर्ग हलेन रासविहारी कुम्भकार मदनमोहन कुम्भकार श्रीपञ्चपति कुम्भकार श्रीगणपति कुम्भकार श्रीधीरेन्द्रनाथ कुम्भकार श्रीसुनीलवरण कुम्भकार श्रीबुद्धदेव कुम्भकार जयन्ती कुम्भकार श्रीतारकनाथ कुम्भकार श्रीवैद्यनाथ कुम्भकार श्रीविश्वनाथ कुम्भकार श्रीबाउलदास कुम्भकार श्रीचण्डीदास कुम्भकार श्रीदेवाशीष कुम्भकार श्रीभूतनाथ कुम्भकार श्रीजगन्नाथ कुम्भकार श्रीनाडुगोपाल कुम्भकार श्रीकाङ्गन बुठुकार श्रीमपुर कुम्भकार श्रीजहरलाल कुम्भकार श्रीरवीन्द्रनाथ कुम्भकार श्रीब्रजनाथ कुम्भकार नन्दलाल कुम्भकार श्रीकार्तिक कुम्भकार श्रीमती उर्मिला कुम्भकार प्राय 25 जन शिल्ली जेला ओ राज्यस्तर थेके पुरस्कार प्राप्त एदेर मध्ये एकजन जातीय पुरस्कार प्राप्त हलेन रासविहारी कुम्भकार। तिनि 1969 साले जातीय स्तर पुरस्कार पान।

समवाइ ओ सरकारी साहाय्य :-

अतीत थेके समग्र देश कुटिेर शिल्लेर उपर निर्भरशीला। एहि प्रसङ्गे पाँचमुड़ा टेराकोटा शिल्लेर उन्नयन प्रसङ्गे शिल्ली ओ सरकारेर भूमिकार किछु तथ्य तुले धरा यका। सरकारी नियमानुयायी विगत 3-12-59 तारिथे पाँचमुड़ा मृंशिल्ली समवाय समिति लिः प्रतिष्ठित हय। समितिेर उद्देश्य सामग्रिकभावे शिल्ल ओ शिल्लीदेर उन्नतिसाधन करा। प्रकृतपक्षे दीर्घ समयेर मध्येओ एटा संभव हयनि। कारण शिल्ली सदस्यदेर उपयुक्त शिक्षा ओ चेतनार अभाव। समिति परिचालनार जन्य यथेष्ट समय दिते हय। किन्तु यादेर कर्म ना करले संसार चले ना तारा समय देवे कि करे। समिति शुरुेर प्रथम दिके किछुटा उन्नतिेर सूत्रपात देखा यय। सरकारी अर्थे काँचामाल माटि ओ उन्नतमानेर चाका प्राप्तिते किछुटा हलेओ समस्यार समाधान हयेछिल। किन्तु अवहेलावशतः ओ सहयोगितार अभावे आगामीदिनेर उन्नयन ओ कर्मसंस्थान बाधाप्राप्त हय। केना जमिेर माटि शेष हओयाते शिल्ली परिवार सङ्घटेर मुखे पडे। बाध्य हये शिल्लीरा चाँदा संग्रह करे एकाटा माटिेर जायगा क्रय करे। किन्तु निकुष्ट मानेर माटिेर जन्य जायगाटा अकेजो अवस्थाय पडे आछे। दीर्घदिन धरे अपरेर पतित जायगा ओ पुकुर थेके माटि संग्रह करे कोनोरकमभावे शिल्लीरा काज चालिये याछे। एदिके दीर्घदिन सांगठनिक काज बन्ध थाकाय समिति मृत अवस्थाय उपनीत। विगत दुहाजार साले समितिके पुनरुज्जीवित करार लक्ष्ये एकाटि बलिष्ठ कार्यानिर्वाहक कमिटी गठनेर सिद्धान्त नेओया हय। दुहाजार एक साले चूडास्तु सिद्धान्त मोताबेक श्रीयुक्त तारकनाथ कुम्भकार ओ श्रीयुक्त फाटिकचन्द्र कुम्भकार यथाक्रमे सम्पादक ओ सभापति हन। नवगठित कमिटी चिन्ताभावना करे सवार आगे समितिेर एकाटि कार्यालय निर्माणेर उद्योग ग्रहण करे। येथाने बसे उन्नयन सम्पर्कित आलोचना हवे। सेहि साथे देश विदेश थेके शिल्लानुरागी व्यक्तिवर्गण उपस्थित हले आश्रय निते पारवे, सेथाने पानीय जल ओटयलेटेर व्यवस्था थाकवे। शोरूम खुले उतंसदित जिनिसेर किछुटा हलेओ साजानो यावे। साधारण सभा ओ प्रशिक्षणेर पक्षे सहजसाध्य हवे। गृह निर्माणेर टाकार जन्य सरकारेर निकट आवेदन करा हय। किन्तु सुविधागत पाड़ा काछाकाछि केनार मतो जमिेर अभाव। बह चेट्टार पर समाधान हल। ग्राम्य रास्तार दुपाशे दुखणु जमि क्रय करा हल। सेथानेहि समितिेर कार्यालय प्रतिष्ठित हयेछे सरकारी टाकाय। टाकार शीर्षभाग DRDC कियदंश 'खादि ओ ग्रामीण शिल्ल परिषद, बाँकुड़ा'र अर्थानुकुले ओ 'तालडांरा पङ्गायत समिति'र निर्माण सहायक द्वारा द्वितल विशिष्ट कार्यालय, एकशत टाका क्रय ओ कुडिटी पुयान

(চুল্লি) তৈরির টাকা ব্যয় করা হয়েছে সদস্যদের উন্নয়নের জন্য। সমিতির সদস্য সংখ্যা ক্রমশ বৃদ্ধি পাচ্ছে। শিল্পীদের সঠিক পরিচয়পত্র হিসাবে 'Artisan Card' সমিতির প্রত্যেক শিল্পীদের মধ্যে প্রদত্ত হয়েছে। আরও উল্লেখ করা প্রয়োজন বিগত দু'হাজার সাল থেকে 'খড়গপুর আই.আই.টি. ইনস্টিটিউট' পাঁচমুড়ার টেরাকোটা শিল্পকে আরও উন্নত স্থানে পৌঁছানোর লক্ষ্যে একটি উন্নতমানের চুল্লি তৈরির উদ্যোগ নেন। পাশাপাশি কাজের সুবিধার্থে একটি দু'চালার সেড নির্মিত হয়েছে। কিন্তু বার বার চেষ্টা করেও উন্নতমানের চুল্লি তৈরিতে ব্যর্থ হয়েছে। ব্যর্থতার কারণ শিল্পীদের কাছে আজও অন্ধকারে রয়ে গেছে। সমিতির গঠনতন্ত্রের নিয়মানুযায়ী বিগত ২০১১ সাল থেকে ২০১৭ সালের মধ্যে কয়েকবার কার্যনির্বাহক কমিটি গঠিত হয়েছে। সমিতির বর্তমান সম্পাদক শ্রীযুক্ত দীপঙ্কর কুম্ভকার ও সভাপতি শ্রীযুক্ত ব্রজনাথ কুম্ভকার। নবনির্বাচিত কমিটিও উন্নয়নকল্পে সচেষ্ট ভূমিকা পালনে ব্যস্ত। সমিতির বর্তমান সদস্য সংখ্যা দেড় শতাধিক। সমিতিতে মহিলা সদস্যও সন্তোষজনক। বিগত তিন চার বৎসর যাবৎ পশ্চিমবঙ্গ সরকার অনুমোদিত 'বাংলানাটকডম' নামক একটি সুবহৎ সংস্থা পাঁচমুড়ার টেরাকোটা শিল্পের সার্বিক উন্নয়ন প্রকল্পে আকর্ষণীয় ভূমিকা পালন করে চলেছে। সমিতির সাথে বোঝাপড়ার মাধ্যমে অনেক মিটিং, ট্রেনিং ও সংস্থার নিয়ম সংক্রান্ত বহুবিধ আলোচনাচক্র অনুষ্ঠিত হয়েছে। শিল্পের প্রচার ও প্রসারকল্পে আন্তর্দেশীয় বহু মেলায় যোগদানের ব্যবস্থাও করা হয়। গত ২০১৪ থেকে ২০১৬ বর্ষে তিনবার স্থানীয়ভাবে মেলার ব্যবস্থা করা হয়েছে। জেলা ছাড়িয়ে সমগ্র রাজ্যের মানুষ যাতে টেরাকোটা খ্যাত পাঁচমুড়ার সাথে পরিচিতির সুযোগ হয় সেই উদ্দেশ্যে এই মেলার আয়োজন। পাঁচমুড়া হাইস্কুল ময়দানে তিনদিন ব্যাপী অনুষ্ঠানের সুব্যবস্থা হয়ে থেকে। পশ্চিমবঙ্গের বিভিন্ন প্রান্ত থেকে আমন্ত্রিত ব্যক্তিবর্গের উপস্থিতিতে লোকসংগীত, ছোঁনাচ, নাট বাউলগানের বহুবিধ খ্যাতনামা শিল্পীদের দ্বারা অনুষ্ঠান মঞ্চে পরিবেশিত তাছাড়া 'বাংলানাটকডটকম' এর আর্থিক সহায়তায় গত বছর কাজের না সংগ্রহের জন্য নিকটবর্তী স্থানে এক খণ্ড জমি ক্রয় করা হয়েছে। এট আশু প্রয়োজন ছিল। শিল্প ও শিল্পীর স্বার্থে 'বাংলানাটকডটকম'-এর উল্লেখযোগ্য অবদান প্রশংসনীয়। অবহেলিত পাঁচমুড়ার টেরাকোটা শিল্প সারা দেশ এ বিশ্বের দরবারেও সমাদৃত। এর পরিকাঠামোগত উন্নয়ন হলে শিল্পী পরিবার নিজেরাই নিজের কর্মসংস্থান করতে সক্ষম হবে। বলা বাহুল্য অনতিবিলে এর উন্নয়নকল্পে সরকার তথা খাদি ও গ্রামীণ শিল্প পরিষদের নিকট থেকে সঙ্গে ভূমিকার আশ্বাস ও ইঙ্গিত পাওয়া যাচ্ছে। এই সংবাদ মুৎশিল্পী সমবায় সমিতি সূত্রে জানা যায়।

ফলাফল এবং বিশ্লেষণ:

সাধারণ পর্যবেক্ষণ এবং মাঠ পরিদর্শন থেকে এটি প্রাথমিকভাবে বলা যেতে পারে যে এই পাঁচমুড়া গ্রামের কাজের পরিবেশ অত্যন্ত শান্তিপূর্ণ এবং এই হস্তশিল্প গ্রাম টি একটি সহযোগিতামূলক ও পাশাপাশি সমন্বয়ের মনোভাব পাওয়া যায়। এই গ্রামটি সমস্ত কাঠামোগত দিক থেকে এতটা উন্নত নয় তবুও তারা তাদের উত্পাদনশীল কাজটি খুব যত্ন সহকারে করে। এই অঞ্চলটি কুম্ভকার পাড়ার জন্য বিখ্যাত, এখানে সর্বাধিক মুৎশিল্প তৈরির কারিগর বসবাস করেন। গ্রামের কেন্দ্রে একটি সাধারণ বসার জায়গা রয়েছে যা 'বৈঠক' নামে পরিচিত, সেখানে কারিগররা তাদের সাধারণ সভা এবং মুৎশিল্পের ব্যবসা সংক্রান্ত কথোপকথনের জন্য সমবেত হন। এই গ্রামে আরও একটি সম্প্রদায় গঠন রয়েছে যা 'পাঁচমুড়া মুৎশিল্পী সমবায় সমিতি' নামে পরিচিত যা এই নৈপুণ্য কর্মকাণ্ডের বৃদ্ধি এবং বিকাশের জন্য বিশ্লেষণ করার জন্য শ্রমিকদের দ্বারা তৈরি একটি সংগঠন হিসাবে কাজ করে।

বর্তমান ক্ষেত্র অধ্যয়নের মাধ্যমে কারিগর সম্প্রদায়ের সামাজিক-সাংস্কৃতিক এবং অর্থনৈতিক বিশ্লেষণ করা যায়। এই অঞ্চল সাংস্কৃতিক ধারণা ও গতিশীলতার ক্ষেত্রে গুরুত্বপূর্ণ ভূমিকা পালন করে। এই জরিপ থেকে বলা যায় যে, সঠিক উন্নয়ন কৌশল না থাকা, আর্থিক ও প্রযুক্তিগত সহায়তাহীন এবং অন্যান্য প্রতিবন্ধকতার অনুপস্থিতির কারণে কুম্ভকার সম্প্রদায়ের আর্থ-সামাজিক অবস্থা ক্রমাগতই নিম্নগামী হচ্ছে। প্রযুক্তিগত উদ্ভাবন এবং অগ্রগতির হারও খুব ধীর। এটি তার পূর্ণ শক্তি দিয়ে বাজারে প্রতিযোগিতা করতে পারে না। এই গবেষণা অধ্যয়নের জন্য বিভিন্ন সামাজিক-সাংস্কৃতিক এবং জনসংখ্যাগত কারণ বিবেচনা করা হয়। উত্তরদাতাদের বয়স, সাক্ষরতার অবস্থা, আয়ের স্তর, শ্রেণী এবং বর্ণের অবস্থা, ধর্মীয় গোষ্ঠী, আবাসনের অবস্থা কিছু মৌলিক পরামিতি যা এই গবেষণা অধ্যয়নের জন্য বিবেচনা করা হয়।

উপসংহার

শিল্পী হলেন তারাই যারা নিজস্ব দক্ষতায় আসল কে প্রকাশ করে থাকেন। এমনই শিল্পের উদাহরণ উপরের পর্বে উল্লেখ্য। মাটি ও পাথরকে বিভিন্ন প্রযুক্তির মাধ্যমে রূপ দিয়ে ও মাটিকে পুড়িয়ে শক্ত বা দীর্ঘস্থায়ী করা

এমনই একটি শিল্পের কৌশল। এই কাজেই পাঁচমুড়া গ্রামের কুম্ভকার পরিবারগুলি নিপুন দক্ষ।।পাঁচমুড়া সমাজ জীবনে শিল্প-কর্ম কতদিন আগে শুরু কিংবা কারা শুরু করেছিল তার সরকারি লিখিত তথ্য আজও জানা সম্ভব হয়নি। ৭০ বছর পূর্বে ব্রিটিশরা শাসন থাকাকালীন পাচমুড়া গ্রামের অবস্থা ছিল চরম অন্ধকার , শিল্প কর্ম বলতে তখন ছিল মৃৎপাত্র ও গ্রামীণ পূজোতে ব্যবহৃত দেবদেবীর মূর্তি নিদর্শন যা আজকালের দিনে সমৃদ্ধ লাভ করেছে। পাঁচমুড়ার টেরাকোটার ঘোড়া শিল্প এখন বিশ্বের বিখ্যাত রাষ্ট্রীয় পুরস্কার প্রাপ্ত শিল্পী প্রাতঃ রাসবিহারী কুম্ভকারের এর অবদান। স্বর্ণীয় ৫০-৬০ বছর পূর্বে পাঁচমুড়ার সকল কর্মকার গোষ্ঠী মৃৎপাত্র তৈরিতে ব্যস্ত ছিল কিন্তু পরিস্থিতির চাপে চাহিদা দুটো কমতে থাকায় হাতি ঘোড়ার সহ বর্তমান নতুন জিনিস তৈরির আগ্রহ বাড়লে ইদানিং পাঁচ মুড়ার শিল্প সংবাদ বৃদ্ধি পেয়েছে শিল্প সংখ্যা কম নই এবং শিল্পীদের গুণগত মান ও উৎপাদন ক্রমশ উর্ধ্বমুখী।যা আজ বিশ্ব দরবারে সুনাম অর্জন করেছে।

গ্রন্থপুঞ্জিকা:

- [1] রামানন্দ চট্টোপাধ্যায় - শিল্প ও সংস্কৃতি বাঁকুড়া (২০০৩ কোলকাতা পুস্তকমেলা।)
- [2] সঞ্জয় মুখোপাধ্যায় - সমাজ ইতিহাসের ধারায় দক্ষিণ পশ্চিম বঙ্গ (২০২২ ,1লা জুলাই)
- [3] বাঁকুড়া অর্থনীতিতে লোক শিল্প(প্রথম খন্ড) - অচিন্ত্য জানা।
- [4] জেলা লোক সংস্কৃতি ও পরিচয় গ্রন্থ বাঁকুড়া(2002) - লোক সংস্কৃতি ও আদিবাসী সংস্কৃতি কেন্দ্র।
- [5] ডঃ শান্তি সিংহ - বাঁকুড়া পুরুলিয়া শিল্প সংস্কৃতি
- [6] টেরাকোটা শিল্প ও পাঁচমুড়া গ্রাম কুলাল পত্রিকা
- [7] পায়ে পায়ে বাঁকুড়া - রত্না ভট্টাচার্য শক্তিপদ ভট্টাচার্য
- [8] বাঁকুড়া জেলার বিবরণ রামানুজ কর ও ফকিরদাস চট্টোপাধ্যায়
- [9] রাঢ় সংস্কৃতির আঙিনায় বাঁকুড়া অচিন্ত্য জানা
- [10] বাঁকুড়া লোকসংস্কৃতি পরিচয় গ্রন্থ